# साहित्योत्सवः ट्रांसजेंडर कवियों ने संवेदनाओं को व्यक्त किया

अमर उजाला ब्यूरो

**नई दिल्ली।** साहित्य अकादमी में आयोजित छह दिवसीय साहित्योत्सव का अंतिम दिन बच्चों और ट्रांसजेंडर कवियों के नाम रहा। साहित्य अकादमी द्वारा राजधानी में पहली बार ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। ट्रांसजेंडर ने कविताओं के माध्यम से अपनी संवेदनाओं को दर्शकों के बीच बखूबी पेश किया।

जूनियर और सीनियर वर्गों में कहानी और कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्यालयों के 300 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। बच्चों के लिए कार्टून बनाने के सत्र का आयोजन कार्टूनिस्ट उदय शंकर के साथ किया गया। प्रख्यात बाल लेखक दिविक रमेश और रजनीकांत शुक्ल ने बच्चों से बातचीत की। बालिका जैबुन्निसा 'हया' ने बाल कहानी सुनाई।

**छह दिवसीय कार्यक्रम का समापन कई स्कूलों के 300 बच्चों ने लिया भाग**

**राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय साहित्य में गांधी' का भी हुआ समापन**

ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात साहित्यकार एवं विदुषी मानबी बंद्योपाध्याय ने दिया, जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं और एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। 12 ट्रांसजेंडर कवियों ने अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं। पश्चिम बंगाल, बिहार एवं छत्तीसगढ़ से साहित्य अकादमी पहुंचे इन कवियों में कुछ प्रोफ़ेसर, अध्यापक और सिविल इंजीनियर आदि पदों पर कार्यरत हैं। सभी ट्रांसजेंडर कवियों की कविताओं में उनकी पहचान को लेकर दर्द दिखाई दिया।

बिहार से आई कवि रेशमा ने कहा कि अब जो थोड़ा बहुत सम्मान उन्हें मिल रहा है, वह कानून की वजह से है ना कि समाज द्वारा दिया जा रहा है। ट्रांसजेंडर कवयित्रियों में देवज्योति भट्टाचार्जी, रानी मजूमदार, शिवानी आचार्य, रेशमा प्रसाद, देवदत्त विश्वास, अहोना चक्रवर्ती, प्रस्फुटिता सुगंधा, विकशिता डे, कल्पना नस्कर, अंजलि मंडल, रवीना बारिहा और अरुणाभ नाथ शामिल थे। इसके साथ ही 'आज भारत में प्रकाशन की स्थिति' विषय पर परिचर्चा भी आयोजित की गई। राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय साहित्य में गांधी' के अंतिम दिन शनिवार को चार सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें भारतीय काव्य, नाटकों पर गांधी का प्रभाव, लोकप्रिय संस्कृति में गांधी, गांधी पर समकालीन साहित्यिक विमर्श एवं गांधी पर प्रभाव की चर्चा की गई।

# साहित्य की सरिता में 250 साहित्यकारों ने लगाई डुबकी

ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन में कविता पाठ करतीं प्रतिभागी • जागरण

**जागरण संवाददाता, नई दिल्ली :** साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित छह दिवसीय साहित्योत्सव का शनिवार को ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन के साथ समापन हुआ। भाषा सम्मान अर्पण, आदिवासी लेखिका सम्मिलन, साहित्य अकादमी पुरस्कार अर्पण, पूर्वोत्तरी लेखक सम्मेलन, संवत्सर व्याख्यान, युवा सहिती और भारतीय साहित्य में गांधी सरीखे कार्यक्रमों और देश भर से पहुंचे 250 से ज्यादा साहित्यकारों की उपस्थिति ने कार्यक्रम में समां बांधा। आखिरी दिन बच्चों के लिए भी विभिन्न बाल गतिविधियां आयोजित हुईं। इसके अंतर्गत कविता-कहानी लेखन प्रतियोगिता, कार्टून बनाने का सत्र, बाल साहित्यकारों के साथ बातचीत और बाल कहानियां सुनाने तथा बहादुर बच्चे के साथ संवाद जैसे कई आयोजन किए गए। कार्टूनिस्ट उदय शंकर ने बच्चों को कार्टून बनाना सिखाया, वहीं बाल लेखक दिविक रमेश और रजनीकांत शुक्ल ने बच्चों से बातचीत की।

**पहली बार हुआ ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन :** साहित्योत्सव के साथ दिल्ली में भी पहली बार ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात ट्रांसजेंडर साहित्यकार मानबी बंदोपाध्याय ने किया। अकादमी की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि इससे सबके लिए सम्मान के नए रास्ते खुलेंगे। कवि सम्मेलन में पश्चिम बंगाल, बिहार एवं छत्तीसगढ़ से आए देवज्योति भट्टाचार्जी, रानी मजुमदार, शिवानी आचार्य, रेशमा प्रसाद, देवदत्त विश्वास, अहोना चक्रवर्ती, प्रस्फुटिता सुगंधा, विकशिता डे, कल्पना नस्कर, अंजलि मंडल, रवीना बारिहा एवं अरुणाभ नाथ ने अपनी कविता प्रस्तुत की। सभी की कविताओं में उनके घर वालों की ओर से उनकी उपेक्षा करना तथा समाज की ओर से उन्हें स्वीकार न करने का दर्द था। समारोह के समाप्ति दिवस पर 'भारत में प्रकाशन की स्थिति' व 'भारतीय साहित्य में गांधी' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन हुआ।

# बच्चों के लिए कहानी व कविता प्रतियोगिता आयोजित

**नई दिल्ली, 2 फरवरी (देशबन्धु)। साहित्योत्सव का अंतिम दिन बच्चों एवं ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन के नाम रहा। बच्चों के लिए आज विभिन्न बाल गतिविधियों के अंतर्गत कविता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, कार्टून बनाने का सत्र, बाल साहित्यकारों के साथ बातचीत और बाल कहानियां सुनाने तथा बहादुर बच्चे के साथ संवाद जैसे कई आयोजन किए गए। बच्चों के लिए कहानी और कविता प्रतियोगिता जूनियर और सीनियर वर्गों में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्यालयों से आए 300 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया।**

बच्चों को कार्टून बनाने का सत्र प्रख्यात कार्टूनिस्ट उदय शंकर के साथ किया गया तथा प्रख्यात बाल लेखक दिविक रमेश और रंजनीकांत शुक्ल ने बच्चों से बातचीत की। ज़ैबुन्निसा 'हया' ने बाल कहानी सुनाई। ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन का आयोजन दिल्ली में पहली बार आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात साहित्यकार एवं विदुषी मानबी बंद्योपाध्याय ने दिया जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं और एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। वे लंबे समय ट्रांसजेंडर समाज को एक सम्मानित आवाज देने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने ट्रांसजेंडर कवियों को मंच प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी प्रशंसा करते हुए कहा कि यह अवसर हम सबके लिए स्मरणीय है और इससे हम सबके लिए सम्मान के नए रास्ते खुलेंगे। इस अवसर पर 12 ट्रांसजेंडर कवियों ने अपनी कविता प्रस्तुत कीं। ये ट्रांसजेंडर कवि पश्चिम बंगाल, बिहार एवं छत्तीसगढ़ से आए थे। इनमें से कुछ प्रोफेसर, अध्यापक, सिविल इंजीनियर आदि तक थे। सभी ट्रांसजेंडर कवियों की कविताओं में एक ही मुख्य दर्द था और वो था अपनी पहचान को लेकर।

**हमारे तन को छूना चाहते हैं मन को कोई नहीं : मानबी**

सभी ने कहा वे पैदा तो मर्द के रूप में होते हैं लेकिन उनका मन स्त्री का होता है। सभी के मन में उनके घरवालों द्वारा उनकी उपेक्षा करना तथा समाज द्वारा उन्हें स्वीकार ना करने का दर्द था। सभी ने कहा कि सब लोग हमारे तन को छूना चाहते हैं लेकिन मन को कोई नहीं। रेशमा जो बिहार से आई थीं ने कहा कि अब जो थोड़ा बहुत सम्मान उन्हें मिल रहा है वह कानूनों की वजह से है ना कि समाज द्वारा दिया जा रहा है। अपनी कविता प्रस्तुत करने वाली ट्रांसजेंडर कवयित्रियां थीं-देवज्योति भट्टाचार्जी, रानी मजुमदार, शिवानी आचार्य, रेशमा प्रसाद, देवदत्त विश्वास, अहोना चक्रवर्ती, प्रस्फुटिता सुगंधा, विकशिता डे, कल्पना नस्कर, अंजलि मंडल, रवीना बारिहा एवं अरुणाभ नाथ।

आज भारत में प्रकाशन की स्थिति विषयक पर एक परिचर्चा का भी आयोजन किया गया, जिसका बीज वक्तव्य निदेशक, ग्लोबल एकेडेमिक पब्लिशिंग, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के सुगता घोष ने दिया। रमेश कुमार मित्तल, अशोक माहेश्वरी, बालेंदु शर्मा दाधीच, भास्कर दत्ता बरुआ, रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी कहना था कि प्रकाशन की स्थिति क्षेत्रीय भाषाओं में जरूरी चिंताजनक है लेकिन उसे परस्पर अनुवादों की संख्या बढ़ाकर नियंत्रित किया जा सकता है।

सभी ने क्षेत्रीय भाषाओं के स्तरीय साहित्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्हें केवल क्षेत्रीय कहकर प्रकाशित ना किया जाना इन भाषाओं के समृद्ध साहित्य से पाठकों को वंचित करना है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय साहित्य में गांधी' के अंतिम दिन आज चार सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें भारतीय काव्य, नाटकों पर गाँधी के प्रभाव, लोकप्रिय संस्कृति में गांधी, गांधी पर समकालीन साहित्यिक विमर्श एवं गांधी पर प्रभावों की चर्चा की गई।

# बच्चों व ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन के साथ साहित्योत्सव संपन्न

नई दिल्ली, लोकसत्य

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव का छठा एवं अंतिम दिन बच्चों एवं ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन के नाम रहा। बच्चों के लिए शनिवार को विभिन्न बाल गतिविधियों के अंतर्गत कविता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, कार्टून बनाने का सत्र, बाल साहित्यकारों के साथ बातचीत और बाल कहानियां सुनाने तथा बहादुर बच्चे के साथ संवाद जैसे कई आयोजन किए गए।

बच्चों के लिए कहानी और कविता प्रतियोगिता जूनियर और सीनियर वर्गों में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्यालयों से आए 300 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को कार्टून बनाने का सत्र प्रख्यात कार्टूनिस्ट उदय शंकर के साथ किया गया तथा प्रख्यात बाल लेखक दिविक रमेश और रंजनीकांत शुक्ल ने बच्चों से बातचीत की। जैबुन्निसा 'हया' ने बाल कहानी सुनाई।

ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन का आयोजन दिल्ली में पहली बार आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन

## मिला प्लेटफार्म

- **कवि सम्मेलन में ट्रांसजेंडर की पीड़ा छलकी**
- **सब लोग हमारे तन को छूना चाहते हैं लेकिन मन को कोई नहीं**

वक्तव्य प्रख्यात साहित्यकार एवं विदुषी मानबी बंद्योपाध्याय ने दिया जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं और एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। वे काफी लंबे समय ट्रांसजेंडर समाज को एक सम्मानित आवाज देने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने ट्रांसजेंडर कवियों को मंच प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी प्रशंसा करते हुए कहा कि यह अवसर हम सबके लिए स्मरणीय है और इससे हम सबके लिए सम्मान के नए रास्ते खुलेंगे। इस अवसर पर 12 ट्रांसजेंडर कवियों ने अपनी कविता प्रस्तुत कीं। ये ट्रांसजेंडर कवि पश्चिम बंगाल, बिहार एवं छत्तीसगढ़ से आए हुए थे। इनमें से कुछ प्रोफ़ेसर, अध्यापक, सिविल इंजीनियर आदि तक थे। सभी ट्रांसजेंडर कवियों की कविताओं में एक ही मुख्य दर्द था और वो था अपनी पहचान को लेकर। सभी ने कहा वे पैदा तो मर्द के रूप में होते हैं लेकिन उनका मन स्त्री का होता है। सभी के मन में उनके घरवालों द्वारा उनकी उपेक्षा करना तथा समाज द्वारा उन्हें स्वीकार ना करने का दर्द था। सभी ने कहा कि सब लोग हमारे तन को छूना चाहते हैं लेकिन मन को कोई नहीं।

रेशमा जो बिहार से आई थीं ने कहा कि अब जो थोड़ा बहुत सम्मान उन्हें मिल रहा है वह कानूनों की वजह से है ना कि समाज द्वारा दिया जा रहा है। अपनी कविता प्रस्तुत करने वाली ट्रांसजेंडर कवयित्रियां देवज्योति भट्टाचार्जी, रानी मजुमदार, शिवानी आचार्य, रेशमा प्रसाद, देवदत्त विश्वास, अहोना चक्रवर्ती, प्रस्फुटिता सुगंधा, विकशिता डे, कल्पना नस्कर, अंजलि मंडल, रवीना बारिहा एवं अरुणाभ नाथ शामिल थीं।

भारत में प्रकाशन की स्थिति विषयक पर एक परिचर्चा का भी आयोजन किया गया, जिसका बीज वक्तव्य निदेशक, ग्लोबल अकेडेमिक पब्लिशिंग, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के सुगता घोष ने दिया। रमेश कुमार मित्तल, अशोक माहेश्वरी, बालेंदु शर्मा दाधीच, भास्कर दत्ता बरुआ, रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

# साहित्योत्सव का अंतिम दिन रहा ट्रांसजेंडर कवि के नाम

वैभव न्यूज ■ नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी की ओर से आयोजित किए जा रहे साहित्योत्सव का अंतिम दिन बच्चों और ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन के नाम रहा। बच्चों के लिए आज विभिन्न बाल गतिविधियों के अंतर्गत कविता, कहानी लेखन प्रतियोगिता, कार्टून बनाने का सत्र, बाल साहित्यकारों के साथ बातचीत और बाल कहानियां सुनाने तथा बहादुर बच्चे के साथ संवाद जैसे कई आयोजन किए गए। बच्चों के लिए कहानी और कविता प्रतियोगिता जूनियर और सीनियर वर्गों में आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न विद्यालयों से आए 300 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को कार्टून बनाने का सत्र प्रख्यात कार्टूनिस्ट उदय शंकर के साथ किया गया तथा प्रख्यात बाल लेखक दिविक रमेश और रंजनीकांत शुक्ल ने बच्चों से बातचीत की। जैबुन्निसा 'हया' ने बाल कहानी सुनाई। ट्रांसजेंडर कवि सम्मिलन का आयोजन दिल्ली में पहली बार आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात साहित्यकार मानबी बंद्योपाध्याय ने दिया जो स्वयं ट्रांसजेंडर हैं और एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। वे काफी लंबे समय ट्रांसजेंडर समाज को एक सम्मानित आवाज देने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने ट्रांसजेंडर कवियों को मंच प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी प्रशंसा करते हुए कहा कि यह अवसर हम सबके लिए स्मरणीय है और इससे हम सबके लिए सम्मान के नए रास्ते खुलेंगे। इस अवसर पर 12 ट्रांसजेंडर कवियों ने अपनी कविता प्रस्तुत कीं। ये ट्रांसजेंडर कवि पश्चिम बंगाल, बिहार व छत्तीसगढ़ से आए हुए थे।

SBI
प्रध
यो

# ट्रांसजेंडर कवियों की बैठक...

नई दिल्ली में शनिवार को साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित की गई बैठक में कई राज्यों से पहुंचे ट्रांसजेंडर कवि। फोटो : हरिभूमि

आज का दिन 1509 में दीव की लड़ाई लड़ी गई थी। इसे चौल की दूसरी जंग भी क

# कविता में उजागर हुआ देह और दिल का द्वंद्व

साहित्योत्सव

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

साहित्योसव में पहली बार आयोजित ट्रांसजेंडर कवि सम्मेलन में पुरुष तन और स्त्री मन का द्वंद्व प्रमुखता से उजागर हुआ। देशभर से आए ट्रांसजेंडर कवियों की रचनाओं में समाज में मौजूद लैंगिक भेदभाव के प्रति गहरी व्यथा और वेदना देखने को मिली। उनकी रचनाओं में समाज से सम्मानजनक दृष्टि अपनाने की बात शामिल थी।

यूं तो साहित्य अकादेमी द्वारा हर साल साहित्योत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, लेकिन पहली बार ट्रांसजेंडर कवियों के लिए विशेष सत्र का आयोजन किया गया।

साहित्योत्सव में शनिवार को ट्रांसजेंडर कवियों ने रचनाएं प्रस्तुत कीं। • हिन्दुस्तान

साहित्योत्सव के अंतिम दिन शनिवार को आयोजित कवि सम्मेलन में पश्चिम बंगाल, बिहार और छत्तीसगढ़ से आईं 12 ट्रांसजेंडर कवियों ने रचनाओं का पाठ किया। साहित्यकार एवं विदुषी मानबी बंधोपाध्याय ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। वे खुद ट्रांसजेंडर हैं और पश्चिम बंगाल में एक स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। उन्होंने कहा कि आमतौर पर लोग ट्रांसजेंडर के प्रति असम्मान का नजरिया रखते हैं। जबकि, ट्रांसजेंडर समुदाय में अच्छे-खासे पढ़े-लिखे और प्रतिभाशाली लोग मौजूद हैं।

## घरवालों की उपेक्षा का दर्द

कवि सम्मेलन में प्रस्तुत रचनाओं में भी पुरुष के शरीर और स्त्री की आत्मा का अंतरविरोध प्रमुखता से मुखर हुआ। कविता के माध्यम से कहा गया कि वे पैदा तो मर्द के रूप में होते हैं, लेकिन उनका मन स्त्री का होता है। कवियों के मन में घरवालों द्वारा उनकी उपेक्षा और समाज में पहचान को स्वीकार नहीं करने का दर्द मौजूद था। कवियों ने कहा कि सब लोग हमारे तन को छूना चाहते हैं, लेकिन मन को कोई नहीं छूना चाहता।

## मन को देखने से ही आने वाला समाज बदलेगा

बर्धमान की रानी मजूमदार ने कहा कि सब मन को देखें तो समाज बदलेगा। बिहार से आईं रेशमा प्रसाद ने कहा कि जो सम्मान उन्हें मिल रहा है वह कानून की वजह से है। सम्मेलन में देवज्योति भट्टाचार्जी, शिवानी आचार्य, देवदत्त विश्वास, अहोना चक्रवर्ती, प्रस्फुटिता सुगंधा, विकशिता डे, कल्पना नस्कर, अंजलि मंडल, रवीना बारिहा एवं अरुणाभ नाथ भी मौजूद रहीं।

## कार्यक्रम के अंतिम दिन बच्चों ने कार्टून बनाना सीखा

साहित्योत्सव कार्यक्रम के अंतिम दिन बच्चों के लिए भी विशेष सत्र का आयोजन किया गया। इसमें तीन सौ से ज्यादा बच्चों ने हिस्सा लिया। प्रख्यात कार्टूनिस्ट उदय शंकर ने बच्चों को कार्टून बनाना सिखाया। जबकि, बाल लेखक दिविक रमेश और रजनीकांत शुक्ला से बच्चों ने संवाद किया। जैबुन्निसा हया ने बाल कहानी भी सुनाई। वहीं भारतीय साहित्य में गांधी विषय पर संगोष्ठी भी आयोजित हुई।

“

एक ट्रांसजेंडर पुरुष के शरीर में स्त्री की भावना लेकर पैदा होता है। इस व्यथा को कोई महसूस नहीं कर पाता। ऐसे आयोजन से उन्हें अपने आप को अभिव्यक्त करने का मंच मिलता है।

—रानी मजूमदार, शिक्षिका

ट्रांसजेंडर भी अपनी भावनाएं कविताओं में व्यक्त कर सकते हैं। वे अपने दर्द को वैसे ही महसूस करते हैं, जैसे बाकी सब करते हैं।

—देवदत्त विश्वास, शोधार्थी

जब मैं थोड़ी बड़ी हुई तो समझने लगी कि दुनिया में बहुत लोग हैं, फिर भी मैं अकेली हूं। मैं अपने मन के भावों को कविता का हिस्सा बनाती हूं।

—अहोना चक्रवर्ती, परास्नातक